12.29 hrs.

PAPER LAID ON THE TABLE

ANNUAL REPORT OF THE SALAR JUNG MUSEUM BOARD

The Deputy Minister in the Ministry of Industry and Supply (Shri Bibudhenda Misra): Sir, on behalf of Shri Hajarnavis, I beg to lay on the Table a copy of Annual Report of the Salar Jung Museum Board, Hyderabad, for the year 1963-64. [*Placed in Library. See* No. LT-4367/65].

12.31 hrs.

RE: SITUATION ON KUTCH BORDER

Some hon. Members *rose*—

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री साहब ....

अध्यक्ष महोदय : बार बार रोज इस तरह से होता रहता है.... (इंटरप्शंस)

डा० राम मनोहर लोहिया : इस सम्बन्ध में बंद मत करिये बल्कि हमारा व्यवस्था का प्रश्न सुनिये ।

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : अगर प्रधान मंत्री गलत क़दम उठा कर समझौता करना चाहेंगे तो वह हमारी छाती के ऊपर पैर रख कर वह समझौता करेंगे । उनको हम कोई गलत समझौता नहीं करने देंगे । इस में सारे देश को रोष आ रहा है ।

Shri Vasudevan Nair (Ambalaphuza): May I seek a clarification?

Mr. Speaker: No; no new statement has been made.

Shri Vasudevan Nair: Some proposals have appeared in the newspapers.

Mr. Speaker: He has said what his stand is. I am not concerned with what the papers say. (*Interruption*). This House must take for the present what the Government says.... (*Interruption*).

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): Kindly hear me for a minute.

Shrimati Renu Chakravartty (Barrackpore): The point is not about anything which the Prime Minister has said. The other day he said that he could not divulge the cease-fire proposals made by the United Kingdom. We find all the proposals have come out in the newspapers. He could not inform Parliament. He could have easily said, "We have not accepted them but these are the proposals". He could not do that for whatever the reason may be. But it seems the papers have got it and have published their own thing. Either it has leaked out from the Government departments or the Secretaries or from the United Kingdom. That is why Parliament feels agitated that these things should be placed formally before Parliament making it clear that we have not accepted it rather than come in a roundabout way where the press actually use these in order to build up public opinion.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री विलसन का एक बयान पढ़ कर सुनाना चाहता हूं । श्री विलसन जिनके कि साथ श्री शास्त्री ने जो कुछ किया है वह किया है । "आलदो दी हाउस"—हाउस का मतलब अंग्रेज़ी के सदन से है ।

"Although the House may find it a little difficult, as I do, to understand or explain the difference between a decision not to fire and an actual cease-fire—I think that we may call this a *de facto* cease-fire—we are less concerned with semantics than with the fact that, as things appear to us today,

[डा० राम मनोहर लोहिया]

there is not only an actual stopping of firing but a general desire on the part of both Governments that nothing should be done to aggravate the situation.

In this connection, I should like to pay my tribute to the tremendous work of the two High Commissioners, who met for seven hours to try to sort out the difficulties."

यह तो विलसन साहब का बयान है जो कि बिलकुल इन के खिलाफ़ जाता है । दूसरे जो उन्होंने फ़रमाया कि जब स्टेटस को ऐंटी हो जायगा, लेकिन उस में बिलकुल साफ़ है और स्टेटस को ऐंटी का बिलकुल सवाल नहीं है । बियारबेट पाकिस्तानियों के हाथ में है और रहेगा । इस के सम्बन्ध में मुझ को इत्तिला मिल चुकी है कि वहां के कमांडर इन चीफ़ अय्यूब साहब ने हिलाले जुरूत और सितारे जुरूत यह दो बड़े तमगे वहां के अफ़सरों को दिये हैं बियारबेट लेने के लिए । उस के अलावा मुझे यह कहना है कि प्रधान मंत्री साहब जो बात यहां बयान कर रहे हैं उस के खिलाफ़ सारी कार्यवाही कर रहे हैं गोलाबंदी के बारे में गोलाबंदी हो गई है विलसन साहब ने साफ़ कह दिया है । बियारबेट पाकिस्तानियों के कब्जे में है, कंजरकोट को तो छोड़ ही दीजिये । यह मैंने सुना । अभी मेरे पास मौर्निंग न्यूज़ की खबर आई है । हिलाले जुरूत और सितारे जुरूत के तमगे जमीन वालों को दिये हैं । ऐसा मालूम पड़ता है कि पाकिस्तान द्वारा हवाई जहाज़ भी बियारबेट के मामले में इस्तेमाल किये गये थे । इन सब इलाकों के पाकिस्तान के हाथ में रहते हुए उस के बाद भी जो शास्त्री साहब कहते हैं कि खाली हदबंदी का मामला है तो वह यहां पर बिलकुल ग़लत कहते हैं क्योंकि साफ़ है बयान में 1960 वाले में :—

"Exploratory discussions regarding the boundary dispute in the Kutch-Sind region showed that the differences between the Governments of India and Pakistan could not be settled."

यह हदबंदी का सवाल नहीं है बल्कि यह सीमाविवाद का सवाल है । सरदार स्वर्ण सिंह इस के ऊपर दस्तखत कर चुके हैं इसलिये शास्त्री साहब को ऐसी बातों के होते हुए इन सब चीजों पर ज़रा ठंडे दिल से बातचीत करनी चाहिये । मैं ठंडा आदमी हूं । आप से उम्र में कम हूं । मुझे विधायक होने के नाते गरम होने का अधिकार है क्योंकि जो कानून बनाने वाले होते हैं उन को गरम होने का अधिकार है और जो कुर्सी पर निर्णय देने के लिए बैठता है उस को ठंडा होना चाहिये । इसलिये अब आप मेहरबानी करके हम विधायकों की बात सुनिये ।

यहां पर जो कुछ हो रहा है वह पिछले 25, 30 और 50 वर्षों की पुनरावृत्ति हो रही है । जब हम अंग्रेज़ों से लड़ते थे आज़ादी के जमाने में तो समझते थे कि कोई सूत्र बना कर कोई फारमूला बना कर चाहे वह साम्प्रदायिक पंचाट का फारमूला हो चाहे कोई और फारमूला हो, हम लड़ाई जीत लेंगे, कानून से जीत लेंगे । यह सारा मामला इस तरीके से होने वाला नहीं है । अब यहां पर सफ़ाई होनी चाहिये । बिलकुल सफ़ाई के साथ बातचीत करके हम को निर्णय करना चाहिये । मैं यह नहीं कहता कि युद्ध की घोषणा करो । युद्ध करने का निर्णय करना है तो युद्ध करो और युद्ध न करने का निर्णय करना है तो वैसा निर्णय कर के घोषणा करो जो भी करना हो साफ़ निर्णय कर के उसकी घोषणा करो । मैं युद्ध नहीं चाहता ।

यहां सिर्फ इसलिये दबा दिया जाता हूं कि गलतफहमी फैल जाती है मन में । अब किसी ने कहा कि हिन्दुस्तान में से पाकिस्तान को जो कुछ भी जाता है रसद पलटन वगैरह, जमीन और हवा को छोड़ कर समुद्र के बारे में कुछ नहीं कहा था । समुद्र से वह अपना ले जायं लेकिन चूंकि मैं उस अखबार का नाम नहीं लेना चाहता तो हम लोग दबा दिये जाते हैं । हमारी बात अच्छे तरीके से नहीं आती, खासतौर से श्री बागड़ी की बात । वह हिन्दी में बोलते हैं और वह दबा दी जाती है । वहां सिर्फ ज़मीन और आसमान का मामला था । यह ज़मीन और आसमान जो हिन्दुस्तान का है वह पाकिस्तान को क्यो इस्तेमाल करने दिया जाता है उस को बंद करो । यहां हम लोग दबा दिये जाते हैं इसलिये अध्यक्ष महोदय ज़रा हम लोगों को आप कम दबाइये तो फिर अख़बार वाले यह ग़लती नहीं कर पायेंगे । वह छापते हैं कि इन्होंने समुद्री रास्ता बंद करने की बात कही है । वह हमने कभी नहीं कही थी । इसलिये मेहरबानी करके इस पर बहस कराइये । प्रधान मंत्री साहब से मैं खुद एक प्रार्थना करता हूं । वह जमाना आप भूल जायं जब फारमूला और सूत्र के सहारे हम लोग अपनी आज़ादी हासिल किया करते थे लेकिन अब आप अपनी आजादी कायम रक्खेंगे, मजबूत बनायेंगे अपनी संकल्प शक्ति से और अपने निर्णय से । वह निर्णय चाहे जो कुछ भी हो उस को वह याद करें ।

(कई माननीय सदस्य खड़े हुए)

अध्यक्ष महोदय : क्या इस पर बहस होगी ?

श्री बागड़ी (हिसार) : इस बारे में खुले तौर पर बैठ कर आखिरी बात तय की जानी चाहिये ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : उचित यह होगा कि इस पर बहस कराना मान लिया जाय । आज मानें या दो दिन बाद मानें ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, यह एक अत्यन्त महत्व का सवाल है और इस के लिए अवधि बढ़ानी पड़ेगी ।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, आप कुछ कहने की अनुमति दीजिये मैं काफ़ी देर से खड़ा हो रहा हूं ।

श्री स० मो० बनर्जी : अध्यक्ष महोदय....

अध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर ।

श्री स० मो० बनर्जी : मैं बैठ जाता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठे हुए हैं लेकिन चुप नहीं रहते ।

श्री स० मो० बनर्जी : मैं जो कुछ कहता हूं वह एक्सपंज हो जाता है बाकी सब लोग कह लेते हैं । मैं आप से गुजारिश कर रहा हूं, निवेदन कर रहा हूं . . .

Mr. Speaker: Would the Prime Minister like to say something?

The Prime Minister and the Minister of Atomic Energy (Shri Lal Bhahadur Shastri): *rose—*

श्री मधु लिमये : हमको पहले कुछ कह लेने दीजिये बाद में वह कह दें ।

Shri Ranga (Chittoor): The Chair seems to be completely useless now. (*Interruption*).

श्री मधु लिमये : रंगा साहब को क्यों कष्ट हो रहा है ? खुद तो जब बोलते हैं बोलते चले जाते हैं लेकिन यदि दूसरा कोई बोलता है तो आप को एतराज़ होता है ।

[श्री मधु लिमये]

आप को कोई विशेषाधिकार नहीं है, वहां बैठने के कारण ।

Shri Raghunath Singh (Varanasi): Mr. Ranga has used the word 'useless'. That is objectionable.

Shri Ranga: I said, helpless. In the House of Commons, sometimes they meet without the Speaker. Here, we have the Speaker and we are making him helpless.

Mr. Speaker: Though he might have desired to help me, he has used the word 'useless' . . .

Shri Ranga: I meant 'helpless'. I wanted to help you.... (*Interruption*).

Mr. Speaker: This is not the case of Prof. Ranga alone. There is no respect for the Chair.

Shri Ranga: Please don't say, Prof. Ranga alone.

Mr. Speaker: That is gone now. That is beside the point.

There is no respect for the Chair, no consideration for the Leader of the House and no grace left even for the Rashtrapati. Even ordinary courtesy that is to be shown to each other is not extended. I do not know—I should not express it—what would be the future of ours in this respect, how can we run this democracy, if the Chair is also not obeyed, whatever might be his faults, whatever might be his failings. At least, at sometime there ought to be some check that must be exercised by the Members themselves. When I just make a request to them, sometimes I might say that I am even ridiculed. I have felt it so many times. But whoever he might be—if I am not fit for it, another can come—and whomsoever you might put in the Chair (and this House has the authority to put) he must be respected; then alone the proceedings can continue, and otherwise not. If every time, everyone, whoever he might be, desires to speak and goes on speaking, there is nothing that I can do, as Shri Ranga says, for I am helpless, and I do find myself helpless in certain circumstances. If a Member goes on speaking without listening to me and he asks me that I should sit down because he has to say something, then it is a queer position that is created. I do not know what impressions those who see us might carry about us and about what we are doing and how we are conducting business or transacting business here.

Shri Harish Chandra Mathur (Jalore): We are all very anxious that the proceedings in this House should be conducted with great dignity and with great respect for the Chair. We would certainly like to subscribe to that position and in any manner that you like, and I am sure that all the Leaders of the Opposition will rise to the occasion, and I have not the least doubt that they will help the Chair in enforcing dignified behaviour in this House. I would only request you that you would kindly not permit anything which is contrary to that, and we shall always rally round to your support.

Shri N. Sreekantan Nair (Quilon): *Yatha raja tatha praja.*

Shri Hem Barua (Gauhati): I wanted to put a question asking for a clarification but I would not, in view of what you have said. But I think I have a right to clarify my position, for it was because of an unhappy incident like this that I was suspended for seven days. I do not weep over that, and I do not lament over that. But then I say—I hope you will excuse me for saying like that—that there is an impression created in this House that there are two sets of principles for two sets of Members. When I say like that, I say so because I have felt it in my heart of hearts. The other day, when I put my question, it was a very legitimate question, and the fact that it

was legitimate was conclusively proved by the fact that the Prime Minister, on my insistence, gave a reply to that. But on occasions, I am afraid, —we want to help you in maintaining the dignity of this House, and the appeal you have made just now has struck the cords of response in our hearts; there is no doubt about it, but then at the same time there is this feeling—often we get an impression, particularly I get the impression, that you allow some people to raise a matter although you do not allow other people to raise the same matter whenever they want to do so. It may be that I may be wrong but I have that impression. If you can dislodge me from that impression which I am collecting, then I shall be the happiest, but I have that impression and, therefore, I have placed it before you for consideration.

An hon. Member: What is it that he is saying?

Mr. Speaker: Let him say that. Now, Shri S. M. Banerjee.

Shri S. M. Banerjee: I only wanted to know from the Prime Minister about two things...

अध्यक्ष महोदय : मैं माननीय सदस्य को सवाल करने की इजाजत बाद में दूंगा, लेकिन इस वक्त हाउस में यह बात हो रही है कि हाउस में डिग्निटी रखनी चाहिए ।

श्री स० मो० बनर्जी : जब भी आप इशारा करेंगे, मैं उसकी तामील करूंगा ।

श्री बागड़ी : कह दीजिए कि आप के हुक्म की तामील होगी ।

श्री स० मो० बनर्जी : अध्यक्ष महोदय, आपने जो कहा है, उससे मालूम होता है कि संजीदगी के साथ आप के दिल को चोट लगी है । मैं आप से यह अर्ज करना चाहता हूं कि कभी कभी ऐसे सवाल आते हैं, जिनका सारे देश से सम्बन्ध होता है, और उन सवालों के बारे में सदस्यों के मन में उलझन और परेशानी होती है । जिन लोगों ने हमें चुना है, हम उनके जले हुए दिलों के जज़बात की तर्जुमानी करने के लिए यहां आते हैं । इसलिए आप उन बातों से यह न समझें कि हम आप की तोहीन करने की कोशिश करते हैं या आप के हुक्म की तामील नहीं करते हैं । अध्यक्ष महोदय, आप जानते ही हैं कि मैं तो इंडिपेंडेंट हूं और नान एलाइनमेंट पालिसी में विश्वास रखता हूं । आप जब भी कोई इशारा करेंगे, तो आपके हुक्म की तामील होगी और अगर तामील नहीं होगी, तो आप सज़ा दें ।

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, बार-बार इस हाउस में यह कहा जाता है कि फ़लां बात से जनतंत्र को ख़तरा है या यह कि लोग हमारी हालत को देख कर क्या कहेंगे । मैं आप की ख़िदमत में एक ही बात अर्ज़ करना चाहता हूं कि जब देश के सामने कोई सवाल आते हैं, तब उन सवालों से अन्दाज़ा लगता है कि हमारी हालत क्या है । जहां तक आप के मान का सवाल है, सब से पहले आप का मान आता है, नेता का आता है और राष्ट्रपति का आता है । लेकिन जब सदस्यों के सामने राष्ट्र के मान या राष्ट्र की हानि की बात आती है और अगर उस वक्त किसी को छोटी मोटी चोट लग जाये, तो तड़पना नहीं चाहिए, क्योंकि राष्ट्र और राष्ट्र का मान सबसे बड़ा है अगर राष्ट्र नहीं है, तो न राष्ट्रपति है, न यह पार्लियामेंट है, न लीडर है, न आप हैं और न ही हम हैं ।

श्री ज० ब० सिंह (घोसी) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन करना चाहता हूं । कभी कभी हम लोगों को भी सुन लीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : मैं तो हमेशा सुनता हूं, लेकिन यही तो शिकायत है कि कई माननीय सदस्य इस तरह से खड़े हो कर बोलना शुरू कर देते है ।

श्री ज० ब० सिंह : मैं इसी बात पर एक शब्द कहना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मुझे सुनने में कोई एतराज नहीं है, लेकिन जिस तरीके से माननीय सदस्य कह रहे हैं, वह ठीक नहीं है । माननीय सदस्य क्या कहना चाहते हैं ।

श्री ज० ब० सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं कहता कि आप हमारी बात सुनते नहीं हैं । इस वक्त हाउस में दो तरीके चल रहे हैं । एक तरीका तो यह है कि सदस्य बोलने के लिए खड़े हों. लेकिन कई दफ़ा बार बार खड़े होने पर भी आप देख नहीं पाते हैं । दूसरा तरीका यह है कि मैं खड़ा हो कर चिल्लाऊं और तब मैं आप की आई कैच कर पाता हूं । इसी वजह से वे सब हालतें पैदा हो रही हैं, जिन के बारे में आप कह रहे हैं, इसलिए यह ज़रूरी है कि आप हाउस में एक ही तरीका एक ही नियम, बना दीजिए और उस को मज़बूती के साथ लागू कीजिए । अगर आप उस को मज़बूती से लागू नहीं करेंगे, तब तरीका यही होगा कि खड़े हो कर शोर मचाया जाये, आप की नज़रों को अपनी तरफ़ किया जाये और अपनी बातें कही जायें ।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस समय तो आप मुझे भी कह लेने दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप ने बहुत कह लिया है । मैं आपको बार-बार मौका नहीं दे सकता हूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं इस सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : सबसे ज्यादा समय माननीय सदस्य ने लिया है ।

मैंने हाउस के सामने जो अपील की है, उससे तीन बातें मेरे सामने आती हैं—तीन तरह का मेरा क़ुसूर है, जो मेरे सामने आया है । एक तो यह है कि जो ज़ोर से चिल्लाता है, उसको ज्यादा मौका मिलता है और जो नहीं चिल्लाता है, वह रह जाता है ।

दूसरी बात यह कही गई है कि कई सदस्य प्रिविलेज्ड हैं, जो जब खड़े होते हैं, कुछ कह लेते हैं और दूसरों को बन्द किया जाता है ।

श्री मधु लिमये : यह बात बिल्कुल सही है ।

अध्यक्ष महोदय : अगर यह बात बिल्कुल सही है, तो वह तो आप की बाबत ही शिकायत की जा रही थी ।

श्री मधु लिमये : मेरी शिकायत कोई नहीं कर रहा है । आप ने सब को मौका दिया केवल मुझे नहीं । मेरे ऊपर कोई पाबन्दी तो नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय : अगर आप मेरे साथ इत्तिफ़ाक करते हैं, तो यह शिकायत आप की बाबत की जा रही है ।

तीसरी बात यह कही गई है कि बाज़ ऐसे मामले, ऐसे इस्यूज़, होते हैं, जिन के बारे में मेम्बर्ज़ उस वक्त बहुत ज्यादा एक्सरसाइज्ड़ और टच्ड होते हैं और वे अपने दिल की बात को निकालना चाहते हैं, इसलिए वे मेरा कहना भी नहीं मानते और उस वक्त अपनी बात कह देना शुरू कर देते हैं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : कुछ और बातें हैं अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप खामोश नहीं रहेंगे क्या ?

डा० राम मनोहर लोहिया : खामोश रहता हूं लेकिन काम बिगड़ता रहता है न ?

अध्यक्ष महोदय : आप अब......

डा० राम मनोहर लोहिया : इस वक्त तो सुन लीजिये । आखिर को......

अध्यक्ष महोदय : कितना सुनूं । सब से ज्यादा आप बोले हैं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस सम्बन्ध में कुछ सुनते ही नहीं हैं ।

अध्यक्ष महोदय : इस सम्बन्ध में और नहीं सुन सकता हूं । सबसे अधिक वक्त आपको मिला है फिर भी आप.......

डा० राम मनोहर लोहिया : इस सम्बन्ध में आपने मुझे नहीं सुना है ।

अध्यक्ष महोदय : बहुत आप बोल चुके हैं । अब मैं और नहीं सुन सकता हूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : तब कोई नतीजा नहीं निकलेगा ।

अध्यक्ष महोदय : अगर नुक्स हैं तो मैं उनको दूर करने की कोशिश करूंगा । लेकिन साथ साथ मैं यह कह देना चाहता हूं कि जो आदमी यों ही खड़े हो कर बोलना शुरू कर देंगे वे वक्त नहीं पायेंगे । जो अपने आप मेरे बुलाये के बगैर शुरू कर देंगे उनको मैं नहीं बुलाऊंगा और वे मेरी आई कैच नहीं कर सकेंगे । यह शिकायत मैं मेम्बरों को नहीं होने दूंगा कि मैं उनके साथ या किसी के साथ कोई किसी किसम की रियायत करता हूं । लेकिन मैं साथ साथ सबसे मिल वरतन चाहता हूं । मुझे भी शिकायत है हाउस से । जब कभी मौका आया है और मैंने चाहा है कि मैं सीधे रास्ते पर चलाऊं तो मुझे भी मदद नहीं मिली है । यह मैं शिकायत हाउस से करना चाहता हूं । न मेरे दिल में किसी के प्रति कोई लिहाज़ है और न किसी के खिलाफ़ कोई दुश्मनी । सब के साथ मैं एक सा सलूक करना चाहता हूं ।

जिस बात में मेम्बर साहिबान बहुत ज्यादा एक्साइटिड फील भी करते हों तो भी पार्लिमेंट में तरीके हैं, उनके जरिये से ही उनको उठाया जा सकता है । अगर उस वक्त एक्साइमेंट में भी आप बैलेंस को खो बैठे या उन तरीकों के साथ न चलें तो काम चलना मुश्किल है । फिर भी जब हम इतनी तेजी में भी हों तो भी उन तरीकों से चलें तो ज्यादा बेहतर होगा और हम काम कर सकेंगे । वर्ना यह काम करना मुश्किल होगा ।

आपने मुझे जो मश्विरे दिये हैं मैं तो उन पर चलूंगा लेकिन जिन चीज़ों पर आपने भी चलना है, उन पर आप भी चलें ।

श्री रघुनाथ सिंह : मैं हाउस की तरफ से आपको पूरा विश्वास दिलाता हूं कि हमें आपके साथ पूरी सहानुभूति है और हमारा पूरा सहयोग आपके साथ होगा ।

श्री स० मो० बनर्जी : अभी प्रधान मंत्री ने विश्वास दिलाया है और जो सवाल मेरे मित्र प्रकाशवीर शास्त्री जी ने किया है, उसी की ओर मैं उनका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और मैं चाहता हूं कि वह कुछ और स्पष्टीकरण करें । एक सवाल तो यह है कि ये जो ब्रिटिश प्रोपोजल्ज हैं जिनका ज़िक्र अखबारों में आया है और जिसके बारे में, अध्यक्ष महोदय, मैंने आपको आज सुबह पत्र भी लिखा है लेकिन वह पत्र शायद देरी से आपके पास आया होगा, कि इन में ये एक दो तीन चार बातें हैं, इनको हम से क्यों छिपाया गया है ? शायद सही तौर पर छिपाया गया हो और पार्लिमेंट और देश को इसके बारे में बतलाना उचित न समझा गया हो लेकिन टाइम्ज आफ इंडिया में जो आया है और शायद दूसरे अखबारों में भी आया हो इन प्रापोजल्ज के बारे में क्या वह सही है, क्या वही वाकई में प्रोपोजल्ज ब्रिटिश सरकार से आई हैं, विलसन साहब से आई हैं ? अगर वे नहीं हैं, तो कौन सी हैं ।

दूसरी चीज जिस की तरफ मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह आज के स्टेट्समेन में इंद्र मल्होत्रा ने जो लिखा है :—

> "Two more things have happened to add insult to injury. First, the U.S.A.—without having had any opportunity to inspect the site—has informed New Delhi that the Pakistanis are already pulling out Patton

[श्री स० मो० बनर्जी]

tanks from Kutch and there is nothing more that the U.S. Government should be expected to do.

Secondly, at a time when the Pakistani invaders were rolling down Biarbet and Point 84 in U.S. Patton tanks, U.S. representatives were 'warning' Indian officials that the U.S.A. would take a grave view of any Indian attempt to hit back somewhere other than Kutch. The irony of the whole thing is that these statements are made at a time when not only were the American bombings in North Vietnam continuing but U.S. troops had gone into action in the Dominican Republic".

I want to know whether this is correct. Who were these American representatives who were bullying our officials? If this is not true, serious action should be taken against Shri Inder Malhotra or the Statesman for coming out with such statements. This is a very serious matter.

Shrimati Renu Chakravartty: Why should action be taken against Shri Inder Malhotra? Action should be taken against Government for not taking action against the U.S. Embassy here.

श्री लाल बहादुर शास्त्री : जहां तक अखबार की बात का ताल्लुक है इस में कुछ बातें सही हैं कुछ बातें गलत हैं । जहां तक मेरे कहने की बात है, मैंने जैसा कहा था, और उस को अभी भी मैं ठीक समझता हूं कि जब तक कुछ बातचीत चल रही है तब तक मैं न प्रोपोजल्ज को यहां सरकारी तरीके पर आपके सामने नहीं रख सकता हूं । उस में से एक दो बातें मैं पहले यहां कह भी चुका हूं और वे भी उस में हैं । जैसे मैंने कहा था कि जनवरी 1965 को जो पोजिशन थी, जो स्थिति थी, उसकी वापसी की बात है और सीज फायर की बात है । यह मैंने कहा था पहले भी कि ब्रिटिश प्रोपोजल्ज में, प्रस्तावों में यह बात खास तौर पर रखी गई है । कुछ उस का ज़िक्र आज उस अखबार में भी है । जैसा मैंने कहा कि उसमें कुछ बातें बिल्कुल गलत हैं, कुछ बातें सही हैं लेकिन यहां से कोई मैं उसको आपके सामने नहीं रख सकता हूं ।

जहां तक यू० एस० और अखबार की बात है कोई क्या कहता है मैं उसकी पूरी डिटेल्ज़ की जानकारी नहीं रखता हूं लेकिन कोई यू० एस० के या किसी आदमी के यह कहने से कि भारत इस्तेमाल कर रहा है या भारत दूसरी जगह अगर कुछ करेगा तो उसको "खिलाफ" समझेंगे या उसको बरदाश्त नहीं करेंगे, तो मैं कहना चाहता हूं कि वे बरदाश्त नहीं करेंगे तो हम कब बरदाश्त करने वाले हैं ? कोई अमेरीकन या कोई और इस तरह से किसी बात को कहता है तो हम यह समझते हैं कि वह हमारे खिलाफ हमारे देश के खिलाफ हमारे राष्ट्र के खिलाफ बात करता है और हम उसको मानने को तैयार नहीं हैं ।

श्री मधु लिमये : शब्दजाल के बारे में कुछ नहीं कहा ।

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, आप अभी कह रहे थे कि........

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जायें और मैं नहीं सुन सकता हूं ।

श्री बागड़ी : अभी तो आप कह रहे थे कि मैं कोशिश करूंगा ....

अध्यक्ष महोदय : आपकी मर्जी पर तो सब कुछ नहीं छोड़ा जा सकता है ।

श्री बागड़ी : सवाल का जवाब ही नहीं दिया है ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जायें ।

श्री बागड़ी : तभी तो यह घपला होता है । आप जिस तरीके से करवा रहे हैं, इसी से तो घपला होता है ।